संक्षिप्त समाचार

पीएनबी मैटलाइफ के स्टॉक डीलर और अन्य पर फ्रंट-रनिंग के कारण सेबी का प्रतिबंध

नई दिल्ली, एजेंसी। मार्केट रैगुलेटर सेबी ने पीएनबी मैटलाइफ इंडिया इंश्योरैंस के एक इक्विटी डीलर द्वारा फ्रंट रनिंग (पूर्वसूचना प्राप्त करके ट्रेड करना) का मामला पकड़ा है, जिसमें डीलर और उसके साथियों ने 3 साल से ज्यादा के समय में 21.2 करोड़ रुपए का अवैध मुनाफा कमाया। सेबी ने एक अंतरिम आदेश के तहत सचिन डागली (डीलर) सहित उसके 9 सहयोगियों को बाजार से बैन कर दिया है और उनसे अवैध रूप से कमाए गए मुनाफे की वसूली करने का आदेश दिया है। सेबी ने बैंकों, म्यूचुअल फंड्स और डिपॉजिटरीज को आदेश दिया है कि वे इन 9 इकाइयों के सभी खातों को अगले आदेश तक ब्लॉक कर दें। सेबी की जांच इस मामले में जारी है। सेबी के आदेश में कहा गया है कि इसके निगरानी सिस्टम ने पीएनबी मैटलाइफ के ट्रेड्स में संभावित फ्रंट रनिंग का अलर्ट जैनरेट किया था। इसके बाद की जांच में यह सामने आया कि सचिन डागली पीएनबी मैटलाइफ के ट्रेड्स की जानकारी पहले सन्दीप शंभाकर को भेजता था, जो इसे सचिन के भाई तेजस डागली को भेज देता था। 6 अन्य मध्यस्थों की मदद से वे अंदरूनी जानकारी का लाभ उठाते हुए ऐसे शेयरों में व्यापार करते थे, जिन्हें पीएनबी मैटलाइफ खरीदने वाला था लेकिन उन बड़े ट्रेड्स के एक्सचेंज में भेजे जाने से पहले ही वे उस शेयर को खरीद लेते थे। जब पीएनबी मैटलाइफ के ट्रेड्स भेजे जाते और स्टॉक की कीमत बढ़ जाती, तो वे उन शेयरों को मुनाफे में बेच देते थे। कुछ अन्य मामलों में जब पीएनबी मैटलाइफ को कोई शेयर बेचना होता, तो वे पहले ही उसे शॉर्ट-सेल कर देते थे और फिर बड़े बिकवाली आदेशों के बाद स्टॉक की कीमत गिरने पर उस ट्रेड को मुनाफे में निपटा लेते थे।

100 प्रतिशत रिटर्न देने वाला स्टॉक फिर से बांट रहा है बोनस शेयर

नई दिल्ली, एजेंसी। लगातार दूसरे साल कंपनी बोनस शेयर देने जा रही है। कंपनी इसी हफ्ते एक्स-बोनस स्टॉक के तौर पर ट्रेड करने जा रही है। इस बार कंपनी की तरफ से एक शेयर पर एक शेयर बोनस दिया जाएगा। आइए डीटेल्स में जानते हैं इस कंपनी के विषय में - कंपनी ने शेयर बाजारों को दी जानकारी में कहा है कि 10 रुपये के फेस वैल्यू वाले एक शेयर पर एक शेयर बोनस दिया जाएगा। कंपनी ने 13 दिसंबर 2024 को शेयर बाजारों को दी जानकारी में बताया था कि इस बोनस इश्यू के लिए 26 दिसंबर 2024 की तारीख को रिकॉर्ड डेट तय किया गया है। इससे पहले कंपनी फरवरी 2023 में एक्स-बोनस स्टॉक के तौर पर ट्रेड किया था। तब कंपनी ने एक शेयर पर एक शेयर बोनस दिया था। बता दें, कंपनी लगातार डिविडेंड भी देती आ रही है। 2023 में कंपनी ने एक शेयर पर 2 रुपये और 2024 में एक शेयर पर 3 रुपये का डिविडेंड दिया था। शुक्रवार को कंपनी के शेयर बीएसई में 1.68 प्रतिशत की तेजी के साथ 425.55 रुपये के लेवल पर बंद हुआ था। बीते 6 महीने के दौरान कंपनी के शेयरों की कीमतों में करीब 38 प्रतिशत की तेजी देखने को मिली है। वहीं, 2024 में इस स्टॉक का भाव 138 प्रतिशत चढ़ा है। बता दें, कंपनी का 52 वीक हाई 503.80 रुपये और कंपनी का 52 वीक लो लेवल 166.30 रुपये है। कंपनी का मार्केट कैप 116.77 करोड़ रुपये का है। पिछले 3 साल में शेयरों में 1000 प्रतिशत से अधिक की तेजी देखने को मिली है।

अपने अंडे बेचकर लाखों रुपये कमा रहीं महिलाएं !

भारत समेत कई देशों की युवतियां शामिल

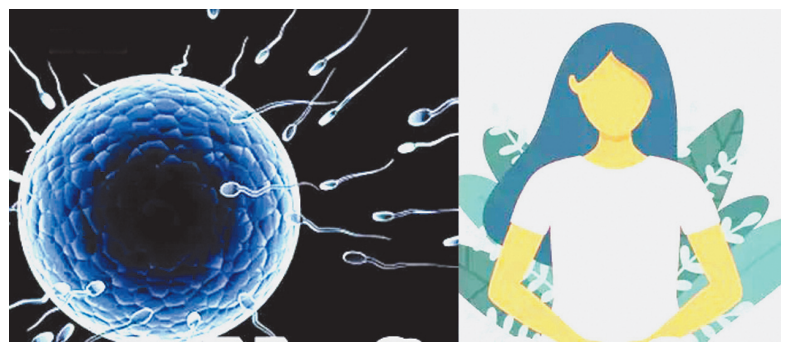

नई दिल्ली, एजेंसी। अप्रैल 2012 में आयुष्मान खुराना की एक मूवी आई थी। नाम था विक्की डोनर। फिल्म में दिखाया गया है कि आयुष्मान खुराना अपना स्पर्म डोनेट करते हैं और उसके बदले उन्हें मोटी रकम मिलती है। अब यह काम लड़कियां भी कर रही हैं। आप सोचेंगे कि लड़कियां भरा स्पर्म कैसे डोनेट कर सकती हैं तो बता दें कि लड़कियां स्पर्म नहीं बल्कि अपने अंडे बेच कर रही हैं। वही अंडे जो शुक्राणु यानी स्पर्म के साथ मिलकर महिला के गर्भ में शिशु का निर्माण करते हैं।

सुनने में शायद अजीब लगे, लेकिन यह सच है। ब्लूमबर्ग की एक रिपोर्ट के अनुसार भारत समेत अर्जेंटीना, ग्रीस, ताइवान आदि देशों की लड़कियां अपने अंडे बेचकर मोटी कमाई कर रही हैं। ये अंडे महिलाओं के अंडाशय में बनते हैं। महिलाओं में दो अंडाशय होते हैं जिनमें 10 से 20 लाख अंडे बनते हैं। रिपोर्ट के मुताबिक फर्टिलिटी इंडस्ट्री अरबों रुपये की हो चुकी है।

31 चैप्टर में बताई कहानी

ब्लूमबर्ग ने 31 चैप्टर की ऑनलाइन एक मैगजीन जारी की है। इसका नाम दा एग है। इसमें ब्लूमबर्ग ने बताया है कि किन-किन देशों की युवतियां अपने अंडे बेच रही हैं और कितनी कमाई कर रही हैं। ब्लूमबर्ग ने इसे अरबों डॉलर का कारोबार बताया है।

क्या लीगल है अंडे डोनेट करना

भारत में अंडे डोनेट करना लीगल है। हालांकि इसके लिए महिला की उम्र कम से कम 23 साल होनी चाहिए। अधिकतम उम्र की सीमा 35 साल है। इसमें शर्त है कि महिला शादीशुदा होनी चाहिए। उसका कम से कम एक बच्चा होना चाहिए जिसकी उम्र कम से कम तीन साल हो। हालांकि ब्लूमबर्ग की रिपोर्ट में यह भी बताया है कि भारत में फर्जी कागजों के आधार पर कम उम्र की लड़कियां भी अपने अंडे बेच रही हैं।

कौन कर रहा है डोनेट

अंडे डोनेट करने में स्टूडेंट से लेकर मॉडल तक शामिल हैं। वहीं भारत में गरीबी क्षेत्र से आने वाली ऐसी युवतियों की संख्या भी काफी है जो अपनी जरूरतें पूरी करने के लिए अंडे बेच रही हैं। इन अंडों का कारोबार एजेंट, सोशल मीडिया, ब्लैक और ग्रे मार्केट आदि के जरिए हो रहा है।

कौन खरीदता है इन्हें

इन अंडों को वे महिलाएं खरीदती हैं जो गर्भवती नहीं हो पातीं। ऐसी महिलाएं इन्हें खरीदने के लिए अंडे डोनेट करने वाली युवती को मिली रकम का 10 से 20 गुना तक देने को तैयार रहते हैं। सबसे ज्यादा खरीदार चीन से होते हैं क्योंकि वहां यह सब बैन है।

यही नहीं, इन अंडों को वे महिलाएं भी खरीदती हैं तो बच्चे पैदा करने की स्थिति में नहीं हैं। लेकिन अपने पति के स्पर्म के साथ अंडों को फर्टिलाइज कराकर किसी दूसरी महिला के गर्भ में रख दिया जाता है। इसे आम भाषा में सरोगेसी कहते हैं।

रिपोर्ट के मुताबिक लोगों में ऐसे अंडों की मांग ज्यादा है जो लंबी और सुंदर महिलाओं के हों। वह इसलिए क्योंकि इन अंडों से पैदा हुई संतान में उस महिला के गुण आने की संभावना ज्यादा होती है। यानी वह संतान भी लंबी और गोरी हो सकती है।

आसान नहीं है अंडे डोनेट करना

यह सुनने में काफी आसान लगता हो, लेकिन प्रैक्टिकली बहुत मुश्किल है। ऑपरेशन के जरिए ही अंडे डोनेट किए जाते हैं। ऑपरेशन से पहले हेल्थ संबंधी कई प्रक्रियाओं से गुजरा जाता है। ऑपरेशन करीब आधे घंटे तक चलता है। एक महिला को 6 बार ही अंडे डोनेट करने की अनुमति होती है। हालांकि हेल्थ के आधार पर अंडे डोनेट करने की प्रक्रिया 6 से ज्यादा बार भी हो सकती है।

कितनी होती है कमाई

ब्लूमबर्ग की रिपोर्ट में भारत की एक युवती का उदाहरण दिया है। इसमें बताया गया है कि एक युवती अपने अंडे बेचकर एक बार में 15 हजार रुपये कमाती है। हालांकि यह कमाई कई बार शरीर की बनावट (लंबा, गोरा आदि) पर भी निर्भर करती है। विदेशों में कमाई लाखों में हो सकती है। रिपोर्ट के मुताबिक इसकी शुरुआती कीमत 17 लाख रुपये है। आइवीएफ क्लिनिक की एक ऑनर के मुताबिक एक डोनर ने अंडे डोनेट करने के लिए करीब 64 लाख रुपये मांगे थे।

रिपोर्ट के मुताबिक अमेरिका में एक महिला ने अपने अंडे बेचकर करीब 1.38 करोड़ रुपये की कमाई की है। उसने 11 बार में 330 अंडे बेचे।

महिलाओं की एक आदत को पहचान कर बना दी 5,100 करोड़ की कंपनी, अब टाटा ग्रुप का हिस्सा है

नई दिल्ली, एजेंसी। चिंग्स सीक्रेट देश का नंबर 1 देसी चाइनीज फूड ब्रांड है। इसे ऊंचाई तक पहुंचाने का श्रेय अजय गुप्ता को जाता है। गुप्ता ने साल 1996 में कैपिटल फूड्स की स्थापना की थी जिसे इसी साल टाटा ग्रुप की कंपनी टाटा कंज्यूमर प्रोडक्ट्स लिमिटेड ने 5100 करोड़ रुपये में खरीद लिया। गुप्ता ने भारतीय महिलाओं की एक आदत को पहचानकर इतना बड़ा बिजनेस खड़ा कर दिया। कंपनी चटनी, मसाला, सॉस और अदरक-लहसुन का पेस्ट बेचती है। इसके दोनों ब्रांड्स का नाम विदेशी है। चिंग्स सीक्रेट और स्मिथ एंड जोंस। इसी खरीदने की होड़ में नेस्ले, यूनिलीवर और टाटा शामिल थीं लेकिन अंत में बाजी टाटा के हाथ लगी। इनक नजर अजय गुप्ता के करियर पर...

पिछले कुछ साल में देश में चाइनीज फूड्स की डिमांड बढ़ी है। इसकी खूबी यह है कि यह देश के हर कोने में मिल जाता है। यह एक नई कैटगरी थी जिसमें अजय गुप्ता ने अपनी किस्मत आजमाई और सफल रहे। गुप्ता ने अपने करियर की शुरुआत बतौर एडवाइजर की थी। वह एक मार्केटिंग एजेंसी चलाते थे। लेकिन वह अपना खुद का बिजनेस खड़ा करना चाहते थे और उन्हें चाइनीज फूड में एक मौका दिखा। उन्होंने 1996 में कैपिटल फूड्स की स्थापना की। वह जानते थे कि भारतीय महिलाओं को बाहर जाकर खाने के बजाय घर में ही खाना बनाना पसंद है। बस फिर क्या था गुप्ता ने उनकी मदद के लिए प्रॉडक्ट्स का पूरा बास्केट लॉन्च किया।

कंपनी ने एक साथ चार तरह के सॉस लॉन्च किया जिनका चाइनीज फूड्स में इस्तेमाल होता है। इसमें सोया सॉस, रेड चिली सॉस, ग्रीन चिली सॉस और विनेगर सॉस शामिल था। स्मिथ एंड जोंस ब्रांड में कंपनी ने लहसुन-अदरक का पेस्ट लॉन्च किया जो अपनी तरह का पहला प्रॉडक्ट था। इसके बाद कंपनी ने 1998 में हक्का नूडल्स, 2007 में टोमैटो कैचअप और 2008 में इंस्टेंट नूडल्स लॉन्च किया। लेकिन कंपनी को सबसे ज्यादा सफलता मिली 2013 में शेजवान चटनी से। इसके बाद कंपनी ने पास्ता मसाला और पेरी-पेरी मसाला लॉन्च किया।

कंपनी की सफलता का सबसे बड़ा सीक्रेट यह है कि अजय गुप्ता ने एक ऐसी टीम बना रखी थी जो पूरे देश में घूम-घूमकर खाना टेस्ट करती थी। हालांकि उनके लिए सफर आसान नहीं रहा। गुप्ता ने जब डिस्ट्रीब्यूटर से अपने प्रॉडक्ट के लिए संपर्क किया तो हर बार निराशा ही हाथ लगी। वह रोडसाइड में फूड स्टॉल लगाने वालों को मुफ्त में प्रॉडक्ट देते थे। धीरे-धीरे उनकी यह ट्रिक काम कर गई और उनके सामान की मांग बढ़ने लगी। उन्होंने नासिक में एक फैक्ट्री खोली। गुप्ता ने साथ ही सोशल मीडिया पर एक कैंपेन शुरू किया।

सोशल मीडिया पर चिंग्स चल निकला और बाजार में भी कंपनी छा गई लेकिन गुप्ता इसे घर-घर पहुंचाना चाहते थे। साल 2004 में गुप्ता ने बिग बाजार के साथ हाथ मिलाया और उनके स्टोर पर सामान रखना शुरू किया। साल 2006 में किशोर बियाणी ने इसमें हिस्सेदारी खरीद ली। उन्होंने कंपनी में 13 करोड़ का निवेश किया लेकिन अपने कोर बिजनस पर फोकस करने के लिए उन्होंने इसे 180 करोड़ में बेच दिया। साल 2011 में कंपनी का टर्नओवर 115 करोड़ रुपये पहुंच गया था।

इसके बाद उन्होंने अभिनेता रणबीर सिंह को अपना ब्रांड एम्बेसडर बनाया। उसके बाद चिंग्स चाइनीज को देश के घर-घर में पहुंच गया। साल 2014 में इसका टर्नओवर 350 करोड रुपये पहुंच गया। इसकी पहुंच देश की लाखों दुकानों तक हो गई। इसके बाद अमेरिका की प्राइवेट इक्विटी फर्म जनरल अटलांटिक ने चिंग्स चाइनीज में 1,500 करोड़ के वैल्यूएशन पर 27 प्रतिशत हिस्सेदारी ले ली। इस फंड से कंपनी का कारोबार बढ़ता रहा। साल 2023 में यह 1,000 करोड रुपये की कंपनी बन गई और इसकी पहुंच देश की पांच लाख दुकानों तक पहुंच गई। इसकी बढ़ती लोकप्रियता को देखते हुए दिग्गज एफएमसीजी कंपनी नेस्ले , टाटा और आईटीसी ने इसमें दिलचस्पी दिखाई। आखिरकार टाटा ने 5,100 करोड रुपये के वैल्यूएशन पर कैपिटल फूड्स को खरीद लिया।

पाकिस्तानियों की मुकेश अंबानी में सबसे अधिक दिलचस्पी ! गूगल सर्च लिस्ट में पहले स्थान पर

नई दिल्ली, एजेंसी। भारत के अरबपति मुकेश अंबानी न सिर्फ देश में बल्कि विदेशों में भी लोकप्रिय हैं। यहां तक कि पड़ोसी देश पाकिस्तान में भी उनका प्रभाव देखा गया है। गूगल द्वारा जारी किए गए 2024 के सर्च डेटा के अनुसार, मुकेश अंबानी पाकिस्तान में सबसे ज़्यादा सर्च किए जाने वाले लोगों की सूची में शामिल हैं। पाकिस्तान में गूगल पर सर्च किए जाने वाले लिस्ट में मुकेश अंबानी आगे तो रहे ही, खास बात ये रही कि ये सर्च एशिया के सबसे अमीर शख्स की नेटवर्थ के बारे में ही नहीं थीं, बल्कि उनके परिवार के बारे में भी थीं। लोगों ने इस बिज़नेस टाइकून के बारे में क्या-क्या खोजा, अगर इस पर देखा जाए तो मुकेश अंबानी की संपत्ति और मुकेश अंबानी की नेटवर्थ सबसे ज़्यादा सर्च किए गए परिणामों में से रहे हैं। गूगल सर्च लिस्ट में कुछ अन्य पूछताछ के तौर पर मुकेश अंबानी का बेटा, मुकेश अंबानी के बेटे की शादी और मुकेश अंबानी का घर के साथ रुपए में अंबानी की नेटवर्थ जैसे कीवर्ड्स सबसे ऊपर रहे हैं। फोर्ब्स के मुताबिक रिलायंस इंडस्ट्रीज के चेयरमैन और मैनेजिंग डायरेक्टर की कुल नेटवर्थ 94.3 बिलियन डॉलर है। मुकेश अंबानी 120 बिलियन के रेवेन्यू वाली रिलायंस इंडस्ट्रीज चलाते हैं। आरआईएल पेट्रोकेमिकल्स, टेलीकॉम, ऑयल एंड गैस, मीडिया, फाइनेंशियल सर्विसेज और रिटेल सहित कई अलग-अलग इंडस्ट्रीज में बिजनेस करती है।

नहीं सस्ता होगा हेल्थ इंश्योरेंस, टैक्स कम करने का फैसला टला

नई दिल्ली, एजेंसी। जीएसटी काउंसिल की 55वीं बैठक जैसलमेर में आयोजित की गई, इसमें वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण की अध्यक्षता में कई राज्यों के मुख्यमंत्री और वित्त मंत्री इस मीटिंग में शामिल हुए। जीएसटी काउंसिल की ये बैठक इस वजह से खास मानी जा रही थी कि इसमें सरकार टर्म लाइफ इंश्योरेंस, हेल्थ इंश्योरेंस और सीनियर सिटीजन के हेल्थ इंश्योरेंस के प्रीमियम पर लग्ज़री की दरों में छूट दे सकती थी लेकिन जीएसटी काउंसिल की इस मीटिंग में फिलहाल इस मुद्दे को टाल दिया गया है। जीएसटी परिषद ने शनिवार को जीवन और स्वास्थ्य बीमा पॉलिसी के प्रीमियम पर कर की दर घटाने का फैसला टाल दिया। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। जीएसटी परिषद की 55वीं बैठक में तय हुआ कि इस संबंध में कुछ और तकनीकी पहलुओं को दूर करने की जरूरत है। इस बारे में आगे विचार-विमर्श के लिए जीओएम को काम सौंपा गया। केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण की अध्यक्षता और राज्यों के उनके समकक्षों की मौजूदगी वाली परिषद ने यह फैसला किया। बिहार के उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने कहा कि समूह, व्यक्तिगत, वरिष्ठ नागरिकों की पॉलिसियों पर कराधान के बारे में फैसला करने के लिए बीमा पर जीओएम की एक और बैठक होगी। चौधरी ने संवाददाताओं से कहा, कुछ सदस्यों ने कहा कि और चर्चा की जरूरत है। हम (जीओएम) जनवरी में फिर मिलेंगे। परिषद ने चौधरी की अध्यक्षता में बीमा पर मंत्रियों के समूह (जीओएम) का गठन किया है, जिसने नवंबर में अपनी बैठक में सावधि जीवन बीमा पॉलिसियों के बीमा प्रीमियम को जीएसटी से छूट देने पर सहमति जताई थी।

भारत के बिना दुनिया आगे नहीं बढ़ सकती

नई दिल्ली, एजेंसी। दुनिया के कई देश इस समय भारत के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रहे हैं। अमेरिका जैसा शक्तिशाली देश भारत की तारीफ करता है। रूस भारत की मदद के लिए हमेशा तैयार रहा है। ऐसे में इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि भारत के बिना दुनिया के कई देश खुद को अधूरा महसूस करेंगे। इस बात पर मुहर पूर्व जर्मन राजदूत वाल्टर जे लिंडनर ने भी लगा दी है।

लिंडनर ने इकनॉमिक टाइम्स के साथ एक इंटरव्यू में कहा कि भारत के बिना दुनिया आगे नहीं बढ़ सकती। लिंडनर के मुताबिक भारत पर दुनिया के कई देशों में किताबें आ रही हैं। इसमें भारत की अर्थव्यवस्था के बारे में बात की जा रही है। लिंडनर साल 2019 से 2022 तक भारत में जर्मन राजदूत रहे हैं। इससे पहले वह जर्मनी के राज्य सचिव थे।

लिंडनर ने भारत पर एक किताब लिखी है। इसका नाम व्हाट द वेस्ट शुड लर्न फ्रॉम इंडिया है। इस किताब में नई विश्व व्यवस्था में भारत की भूमिका और पश्चिम में उस समझ के महत्व पर गहराई से चर्चा की गई है। उन्होंने इंटरव्यू में बताया कि भारत की सॉफ्ट पावर अभी भी मौजूद है क्योंकि यह भारत के डीएनए का हिस्सा है। उन्होंने कहा कि भारत एक ऐसा देश है जिसकी राय और भागीदारी के बिना दुनिया वास्तव में आगे नहीं बढ़ सकती। उन्होंने कहा, अगर आपको प्लास्टिक के खिलाफ लड़ना है या बड़े शहरों को चलाना है या जल संकट का समाधान खोजना है तो ये सभी चीजें तभी हो सकती हैं जब आपको भारत में समाधान मिले। लिंडनर ने कहा कि दुनिया में पिछले दो-तीन सालों में राजनीतिक उथल-पुथल, युद्ध और संघर्षों के बीच भारत महाशक्तियों और पूर्व और पश्चिम और उत्तर और दक्षिण के बीच संतुलन बनाने वाला कारक बनने में कामयाब रहा है। भारत ने ज्यादा कुछ किए बिना भी विदेश नीति में बहुत महत्व हासिल किया है। यह देश के महत्व का स्वाभाविक विकास है। लिंडनर ने देश की आर्थिक व्यवस्था को लेकर भी अपने विचार रखे। उन्होंने कहा कि दुनिया को यह सीखना होगा कि भारत केवल गुरुओं और सत्संगों का स्थान नहीं है।

एडवरटाइजिंग एजेंसी ऑफ़ द ईयर बना पंचतत्व

आउटलुक बिजनेस स्पॉटलाइट - एचीवर्स अवार्ड्स 2024

मुंबई, एजेंसी। आउटलुक बिजनेस स्पॉटलाइट - एचीवर्स अवार्ड्स 2024 का आयोजन 21 दिसंबर को होटल शांगरी-ला दिल्ली में हुआ। यह कार्यक्रम एक शानदार सफलता थी, जिसमें उद्योग जगत के प्रमुख नेताओं और सम्मानित मेहमानों ने व्यापार जगत में उत्कृष्ट उपलब्धियों का जश्न मनाने और उन्हें मान्यता देने के लिए एक साथ आए।

इस कार्यक्रम में मशहूर हस्तियों की उपस्थिति में एडवरटाइजिंग एजेंसी ऑफ़ द ईयर का सम्मान पंचतत्व एडवरटाइजिंग, दिल्ली को दिया गया। इस सम्मान को पंचतत्व के मालिक श्री संजय नारायण सिंह ने ग्रहण किया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में मौजूद भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता शहज़ाद पूनावाला और आउटलुक बिज़नेस के संपादक नीरज ठाकुर ने ये सम्मान श्री सिंह को दिया।

इससे पूर्व में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने स्वयं पंचतत्व को इंटरनेशनल योग डे के उत्कृष्ट लोगो के लिए सम्मानित कर चुके हैं। विदित हो कि पंचतत्व ने ही मोदी सरकार की विकसित भारत संकल्प यात्रा की जिम्मेदारी निभाई थी। जिसमें वाराणसी में खुद प्रधानमंत्री ने शिरकत किया था। इसी एजेंसी ने सौराष्ट्र तमिल संगमम जैसे महत्वकांक्षी कार्यक्रमों को अमलीजामा पहनाया है। जिसके थीम सॉग को प्रधानमंत्री जी ने स्वयं ट्वीट किया। भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों के एडवरटाइजिंग की जिम्मेदारी निभाता पंचतत्व कई बड़े उद्योग घरानों के बड़े ब्रांड कैंपेन भी करता है। आउटलुक बिजनेस स्पॉटलाइट - एचीवर्स अवार्ड्स 2024 के जजों के एक प्रतिष्ठित पैनल ने प्रत्येक नामांकित व्यक्ति का सावधानीपूर्वक मूल्यांकन किया, जिससे निष्पक्ष और पारदर्शी चयन प्रक्रिया सुनिश्चित हुई। इस कार्यक्रम ने इन असाधारण संगठनों को अपना योगदान दिखाने और व्यापार समुदाय में दूसरों को प्रेरित करने के लिए एक मंच प्रदान किया है।

आईपीओ से 327 कंपनियों ने जुटाए रिकॉर्ड 1.69 लाख करोड़, विभोर स्टील को मिला सबसे अधिक सब्सक्रिप्शन

नई दिल्ली, एजेंसी। इस साल भारतीय शेयर बाजार ने जहां रिकॉर्ड उच्च स्तर बनाया, वहीं दूसरी ओर प्रारंभिक सार्वजनिक निर्गम यानी आईपीओ से 327 कंपनियों ने रिकॉर्ड 1.69 लाख करोड़ रुपये जुटाए हैं। वोडाफोन के फॉलोऑन पब्लिक ऑफर के 18,000 करोड़ को जोड़ लें तो यह रकम 1.87 लाख करोड़ रुपये हो जाएगी। इसमें 90 आईपीओ से 1,59,66 करोड़ रुपये मुख्य प्लेटफॉर्म से जुटाए गए हैं। 237 कंपनियों ने एसएमई प्लेटफॉर्म के जरिये 9,192 करोड़ रुपये जुटाए हैं।

एक्सचेंजों के आंकड़ों के मुताबिक, दिसंबर के अंत तक जो इश्यू आने वाले हैं, उनको मिलाकर कुल 26,024 करोड़ रुपये की रकम जुटाई जाएगी। नवंबर में 30,301 करोड़ और अक्तूबर में 38,701 करोड़ रुपये जुटाए गए हैं। इससे पहले 2023 में 58 कंपनियों ने 49,437 करोड़, 2022 में 40 कंपनियों ने 59,939 करोड़ और 2021 में 63 कंपनियों ने 1,19,882 करोड़ रुपये जुटाए थे।

इस साल आईपीओ में विभोर स्टील को सबसे अधिक 324 गुना सब्सक्रिप्शन मिला है। मानबा फाइनेंस को 224 गुना, केआरएन हीट को 213 गुना, गाला प्रीसीजन को 201 गुना और यूनिकॉर्न ई-सोल्यूशन को 168 गुना सब्सक्रिप्शन मिला है। विश्लेषकों का मानना है कि आईपीओ का बाजार अगले साल भी गुलजार रहेगा। 2025 में कई बड़ी कंपनियां बाजार में उतरने वाली हैं। इसमें जियो से लेकर स्पैपडील, एनएसडीएल, एचडीबी, एलजी इलेक्ट्रॉनिक्स, फ्लिपकार्ट, इंदिरा आईवीएफ, हीरो फिनकॉर्प तक शामिल हैं। कुल 89 कंपनियां बाजार में उतर सकती हैं। इसमें से 34 को सेबी की मंजूरी भी मिल चुकी है जो 41,000 करोड़ रुपये जुटाएंगी।